शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 फरवरी 2014

श्री कबीर और कबीर पंथ का संक्षिप्त इतिहास

अंजुला शर्मा (शोधार्थी)
माता गुज़री कॉलेज
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

इस संसार में ऐसे अनेक क्रांतदर्शी, महान साधक हुए हैं, जिन्होंने अपनी साधना, अपनी तपस्या, अपनी निर्मल हृदय भावना और अपने अनुभव के आधार पर ईश्वर को अपने अन्तः करण में 'अनुभव' किया और अपने 'अनुभव' को जन-जन तक पहुँचाया। ऐसे समय में जब चारों और पाखण्डों, कुरीतियों, अंधविश्वासों का बोल-बाला था और पुरोहितवादी व्यवस्था और मुस्लिम शासन - तंत्र व्यवस्था सम्पूर्ण मनुष्यता को निगल जाने के लिए आतुर दिखाई पड़ रही थी। इन दोनों व्यवस्थाओं के बीच साम्प्रदायिकता की आग सामाजिक समरसता के ढाँचे को झुलसा देने के लिए कटिबद्ध थी। ऐसे ही मध्ययुगीन इतिहास के कठिन दौर में कबीर साहिब का आविर्भाव हुआ था, जिन्होंने आगे चलकर न केवल जनचेतना को जागृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी बल्कि व्यवस्था परिवर्तन के लिए समाज में नयी क्रांति के बीज भी आरोपित किये। यही बीज आज देश और दुनिया में विशाल वृक्ष बनकर लहलहा रहे है।

प्रस्तावना

कबीर साहिब सामाजिक चेतना और आध्यात्मिक साधना के शिखर पुरूष थे। उन्होनें शोषितों और पीड़ितों के हक में सामाजिक परिवर्तन का नारा तो दिया ही, साथ ही पाखण्डों और रूढ़ियों से मुक्त कर, धर्म और समाज व्यवस्था को एक नयी दिशा भी दी। कबीर साहिब ने पाखण्डवाद के खिलाफ जनमानस को जागरूक करने का उदघोष किया। अपने दृढ़ निश्चय और स्पष्टवादिता की मशाल को उन्होंने प्रज्ज्वलित किया, उसकी लौ आज भी प्रकाशमान होकर जल रही है। आज अपने देश में जो ज्वलंत समस्याएँ है, उनके समाधान का सन्देश कबीर साहिब की वाणी और आदर्शों में मुखरित है। भारतीय काव्य मनीषा के इतिहास में कबीर साहिब जैसा व्यक्तित्व दूसरा नहीं हुआ है। उनके व्यक्तित्व को किसी भी प्रचलित अभिव्यक्ति के माध्यम से उदघाटित नहीं किया जा सकता, केवल अनुभव किया जा सकता है - "ज्यों गूँगे मीठे फल को रस अंतर्गत ही भावे।"

संत कबीर का कृतित्व

सुप्रसिध्द साहित्यकार एवम् समीक्षक डॉ.हजारीप्रसाद जी द्विवेदी ने उनके बारे में सही ही लिखा है -

"कबीर युगावतारी शक्ति और विश्वास लेकर पैदा हुए थे और युग प्रवर्तक की दृढ़ता उनमें विद्यमान थी, इसलिए वे युग प्रर्वतन कर सके थे। वे सिर से पैर तक, मस्तमौला थे, स्वभाव से फक्कड़, आदत से अक्खड़, भक्त के सामने निरीह, भेषधारी के आगे प्रचंड, दिल के साफ, दिमाग के दुरूस्त, भीतर से कोमल, बाहर से कठोर, जन्म से अछूत, कर्म से वंदनीय।" 1

कबीर साहिब का सीधा - साधा जीवन तथा उनके उच्च कोटि के विचार किसी को भी सहज ही आकर्षित कर लेते हैं। उनकी बानी में समाज को तब और अब भी एक सार्थक दिशा देने की ताकत मौजूद रही है। धार्मिक कट्टरता, पाखण्डवाद, जातिवाद, असहिष्णुता इन सभी

कुरीतियों पर कबीर साहिब ने इतने स्पष्ट विचार रखे हैं जिनका कोई मूल्य नहीं। मनुष्य खुद में इन्सानी गुणों के विकास से ही स्वयं को तथा पूरे समाज एवं राष्ट्र को सुखी व सम्पन्न बना सकता है, यह विचार कबीर ने अपनी रचनाओं में कई बार स्पष्ट भी किया है -

ऊँचे कुल का जनमियाँ, जे करनी ऊँच न होइ।
सुवर्ण कलस सुरै भरया, साधु निंदा सोइ। 2

कबीर साहिब कर्मवाद के पक्षपाती थे, न कि भाग्यवाद के इसलिए उनका यही कहना था कि अपने जन्म पर नाज करने से अच्छा है कि अपनी करनी को ऊँचा किया जाय क्योंकि, उस सोने के कलष की साधु भी निंदा करते है, जिसमें मदिरा भरी होती है।

इसके साथ ही उन्होंने उच्च वर्ग के लोगों को अर्थात् ब्राह्मणों को चुनौती देते हुए कहा है -

तू ब्राहम्न मैं कासी का जुलाहा, चीन्ह न मोरगियाना

जिसे हमेशा दुत्कारकर अपमानित किया गया और मनुष्य होकर भी जिसके साथ पशु से भी बद्तर व्यवहार किया गया ऐसे शोषित, पीड़ित दलित वर्ग का प्रतिनिधित्व कबीर साहिब ने किया है। एवं ईश्वर का वास किसी मन्दिर या मस्जिद में न होकर घट-घट में माना है -

"जोगी गोरख - गोरख करै। हिन्दू राम नाम उच्चरैं
मुसलमान कहै एक खुदाई। कबीर को स्वामी घटि - घटि रहयों समाई।" 3

कबीर साहिब जुलाहे थे और उस समय समाज में भेदभाव, छुआछूत तथा जाति-पाति जैसी कुरीतियाँ फैली हुई थीं। कबीर साहिब ने अपने और अपनी जाति के साथ हुए दुर्व्यवहार और भेदभाव को खुलकर सबके सामने रखा है। वे निराकार ईश्वर की उपासना पर बल देते हैं, तथा मूर्ति पूजा के विरोधी हैं -

पाहन पूजै हरि मिले तो मैं पूजूँ पहार।
ताते यह चाकी भली पीस रवाय संसार। 4

पोथी - पंचांग रटने वाले पंडितों के लिए कबीर साहिब अनपढ़ हो सकते हैं, किन्तु जो व्यक्तित्व मानव एवं मानवता को समझते हैं तथा मनुष्य के भीतर विद्यमान परमात्मा को देखते हैं उनके लिए कबीर साहिब बहुत ही मर्मज्ञ ज्ञानी और विद्वान प्रतीत होते हैं और वे महसूस करते हैं कि कबीर साहिब की लेखनी तो बड़ी व्यापक है -

सात समंद की मसि करौ, लेखनि सब बनराइ।
धरती सब कागद करौ, हरि गुण लिख्या न जाइ। 5

भक्ति परम्परा एक परिष्कृत जीवन शैली है, जो है उसको माँजकर और जैसा चाहिए उसका आदर्श उपस्थित कर कबीर साहब साहिब ने नया मार्ग प्रशस्त किया है। आज का आदमी जीवन यापन के साधनों को जुटाने के लिए बेतहाशा अंधी दौड लगा रहा है और उन साधनों को प्राप्त कर लेने के बाद भी वह अतृप्त और कुण्ठित रहता है। कबीर के अनुसार तृप्ति चाहिए तो उसे अपनी आवश्यकताओं को सीमित करना होगा, भौतिक साधनों की लालसा का परित्याग करना होगा, उसे उतनी ही न्यूनतम वस्तुएँ संग्रहीत करनी होगी, जिससे उसका काम चल सके -

साई इतना दीजिए, जा में कुटुम्ब समायं।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय। 6

यह सत्य है कि नैतिक दृष्टि से वर्तमान परिवेश इतना विकृत हो चुका है जहाँ आदर्शों और नैतिकता की बात करना व्यर्थ है। यदि इस परिवेश का परिष्कार करना है तो कबीर की भाँति साहसी बनकर अपने हाथ में ज्ञान और

जागृति का मुराड़ा लेना होगा और धीरे - धीरे उन तत्वों को झाड़ - फूँककर साफ करना होगा, जिनसे समाज दूषित हुआ है।

हम घर जारा अपना, लिया मुराड़ा हाथ।
अब घर जारों तासु का, जो चलै हमारे साथ। 7

अपने समय में प्रचलित विविध धर्म - साधनाओं, आडम्बरों, अन्ध-विष्वासों का विरोध करते हुए कबीर ने जिस मानवता-प्रधान सहज धर्म की प्रति-स्थापना की है उसके संदर्भ में डॉ.पारसनाथ तिवारी का यह मत उचित ही है - 'सच्ची बात यह है कि हिन्दी साहित्य में कबीर से बड़ा मानवतावादी कोई नहीं हुआ। उन्होनें तत्कालीन भारतीय समाज में प्रचलित समस्त अन्धविष्वासों, रूढ़ियों तथा मिथ्या सिद्धान्तों द्वारा प्रचारित सामाजिक विषमताओं का मूलोछेद करने का बीड़ा उठाया और निर्ममतापूर्वक सभी पाखण्डों पर प्रहार किया। उन्होंने तत्कालीन सामन्तों तथा शासकों को लक्ष्य कर ऐसी अनेक बातें कहीं है जिनसे भौतिक ऐष्वर्यो पर आधारित उनके झूठे अभिमान का भी मूलोछेद हो।" 8

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि कबीर साहब ने समाज के दलित, शोषित, पीड़ित वर्ग के हृदय में विद्रोह की भावना भरी और उनके अधिकारों के लिए समाज में विद्रोह छेड़ा। कबीर साहब जो सच्चे अर्थों में मानवता के पुजारी है। उनकी शिक्षाओं और विचारों की पुनः आवश्यकता है। यदि हम कबीर को सही अर्थों में समझकर उनके बताये रास्ते पर चले, तो निश्चय ही भारत में एक ऐसे समाज का निर्माण हो सकता है। जहाँ धर्म, सम्प्रदाय जाति, वर्ग, वर्ण आदि के आधार पर कोई भेदभाव न हो। जहाँ ईश्वर को लेकर कोई झगड़ा न हो। जहाँ आध्यमिकता एवं प्रेम का साम्राज्य हो। कबीर का जीवन दर्शन सिर्फ साम्प्रदायिक एवं जातिगत भेदभावों का दूर करने तक ही सीमित नहीं है। वे समग्र जीवन में आनन्द एवं आध्यात्मिकता के पक्षधर है। कबीर की यह आध्यात्मिकता एवं आनन्द की धारणा आज के तनाव भरे पूंजीवादी युग में अत्यन्त प्रासंगिक है।

अन्ततः यही कहा जा सकता है कि मानवता के प्रतिष्ठापक कवि कबीर के गहरे सामाजिक सरोकर रहे हैं। वे समाज में व्याप्त हर प्रकार के भेदभाव एवं शोषण के विद्रोही हैं। ऐसे महान व्यक्तित्व को हिन्दू और मुसलमान की दृष्टि से नहीं समझा जा सकता है। उन्हें हिन्दू या मुसलमान सिद्ध करना घोर अन्याय है। सर्वथा अनुचित एवं त्याज्य है। वे सच्चे अर्थों में मानवता के पोषक कवि हैं। इस प्रकार कबीर साहब ने अपनी वैचारिक चेतना को चारों ओर बिखेरते हुए पूरी एक शताब्दी तक भारतीय जनमानस का नेतृत्व किया।

कबीर पंथ का संक्षिप्त इतिहास

महात्मा कबीर के विचारों को जन - जन तक पहुँचाने के लिए उनके समकालीन संतो, शिष्यों तथा अनुयाइयों द्वारा एक व्यापक अभियान चलाया गया जिसके फलस्वरूप देश के विभिन्न अंचलों में भी कबीर वाणी गूँजने लगी। संत कबीर भारतीय हिन्दी साहित्य में उच्च कोटि के साधक एवं संत के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उनके व्यक्तित्व, साधना एवं साहित्य के संबंध में देश - विदेश में बहुत अधिक कार्य हुआ है, अब भी हो रहा है। इस दिशा में देश के विभिन्न भागों में स्थित कबीर पंथ को मानने वाले संतों एवं महंतों ने महत्वपूर्ण काम किया है। उनके प्रयास से महात्मा कबीर का बहुत सा साहित्य प्रकाश में

ISSN 2320 – 0871
17 फरवरी 2014

आया और उनके उच्च आदर्शों एवं सिध्दान्तों को समझने में पर्याप्त सहायता मिली है।

महात्मा कबीर उच्चकोटि के संत, सत्य के दृष्टा तथा स्पष्ट प्रवक्ता थे। इतना फक्कड़ संत पंथ की स्थापना क्यों करेगा जो सभी पंथ एवं सम्प्रदायों को समाप्त कर शुद्ध मानवता का प्रकाश चाहता हो वह स्वयं एक नया पंथ क्यों खड़ा करना चाहेगा ? लेकिन जब किसी भी स्वतन्त्र सदगुरू के पास थोड़ी मात्रा में शिष्य होते हैं, तो वहाँ बिना पंथ एवं सम्प्रदाय की रचना के भी काम चल जाता है, परन्तु जब उनके पास हजारों की भीड़ होने लगती है, तब उन्हें उस नव - दीक्षित समाज को चलाने के लिए जीवन के नियमानुसार एक शुद्ध, वेश, शिष्टाचार, पूजा पद्धति, संस्कार, सिद्धांत को समझने के लिये उस समाज का एक नाम रखना पड़ता है। तब तक पंथ या सम्प्रदाय की स्थापना हो जाती है। वही कबीर पंथ के नाम से स्थापित हुआ।

सदगुरु कबीर के अनेक शिष्य रहे होंगे, किन्तु उनमें चार महत्वपूर्ण माने जाते हैं। श्री जागू साहेब, श्री भगवान साहेब, श्री श्रुतिगोपाल साहेब तथा श्री धर्मदास साहेब। इनके साथ दो शिष्य तत्वा और जीवा के नाम भी बड़े आदर से लिये जाते हैं। इन्हीं शिष्यों के द्वारा ही कबीर पंथ की प्रथम चार गद्दियाँ स्थापित की गयी, जो कालान्तर में कबीर पंथ की चार शाखाओं में विकसित हुई।

1. काशी शाखा - स्थाप्नाकर्ता श्री श्रुतिगोपाल साहेब।

2. छत्तीसगढ़ शाखा - स्थापनाकर्ता श्री धर्मदास साहेब।

3. विद्दपुर शाखा - स्थापनाकर्ता श्री जागू साहेब।

4. धनौती शाखा - स्थापनाकर्ता श्री भगवान साहेब।

उपर्युक्त संतो का विवरण प्रमाण है कि महात्मा कबीर जिस सामाजिक परिवर्तन के लिए अपनी वैचारिक क्रांति प्रारम्भ कर रहे थे, उसको अन्य स्थानों पर भी उनके कबीर पंथी शिष्यों ने भी प्रस्तुत करके कबीर के प्रति अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन किया है। कबीर पंथी संतों ने महात्मा कबीर की वाणी के माध्यम से व अपने स्वानुभूत अनुभवों के आधार पर जन जागरण का स्थान-स्थान पर प्रयास किया।

इस पंथ में अनेक महत्वपूर्ण तथ्य उपयोगी बातें सम्मिलित हैं। इनमें नैतिक नियमों की एक सुव्यवस्था है, जिसे किसी एक पंथ, धर्म, जाति व राष्ट्र की सम्पदा न कहकर समस्त मानव जाति की सम्पदा कहना उचित होगा। कबीर पंथ सार्वदेशिक, सार्वकालिक, पर्याप्त एवं प्रामाणिक है। इसमें सत्य के नूतन ज्ञान का समावेश तथा एक जन जागरण की सामाजिक भावना भावना विद्यमान है। “कबीर पंथ सुन्दर विचारों और भावों का एक पुष्प गुच्छ है जिसकी बाहरी सुन्दरता और भीतरी सुगन्ध दोनों ही मन को मोह लेते हैं।” 9

कबीर पंथ की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें गृहस्थ और विरक्त दोनों को मुक्ति पाने का पूर्णाधिकार प्राप्त है। इसके पहले उपनिषदों ने वैराग्य को तो मुक्ति का साधन माना है, किन्तु शूद्रों को मुक्ति पाने का अधिकार नहीं दिया क्योंकि वे वेद और उपनिषद पढ़ नहीं सकते थे। बौद्ध और जैन धर्मों ने मुक्ति का वायदा तो सबके लिए किया किन्तु उन्होनें भी एक शर्त लगा दी कि संन्यासी हुए बिना मुक्ति किसी को नहीं मिल सकती । कबीर पंथ मुक्ति

का दरवाजा सबके लिए खोलता है और यह भी कहता है कि गृहस्थ रहते हुए भी आदमी मोक्ष प्राप्त कर सकता है। इसमें घर परिवार को छोड़ जंगलों पहाड़ों आदि से परमात्मा की खोज करने का आदेश नहीं दिया गया है! इसमें व्यक्ति का परमात्मा उससे पृथक नहीं समझा जाता केवल उसको देखने वाले को आन्तरिक नेत्रों की आवश्यकता होती है। वह नेत्र गुरू की कृपा से खुल सकता है, जिसकी प्राप्ति का मार्ग है सदाचारपूर्ण जीवन, गुरू भक्ति, गुरू में अखण्ड विश्वास और आत्म-समर्पण। इन साधनों के लिए घर-द्वार छोड़ने, परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों से भागने, पाखण्ड पूर्ण आड़म्बर रचने आदि की किंचित आवश्यकता नहीं है। “कबीर पंथ में वंश गुरूओं का आदर्श जीवन जनता के सम्मुख है। उन्होंने परिवार में रहते हुए सन्तान और पत्नी की सन्तुष्टि के साथ परम तत्व को प्राप्त किया था, जिसके लिए वेदकालीन ऋषि मुनि जंगलों में शरीर यंत्रणा कर वर्षों तपस्या करते थे।”10 वंश गुरूओं में तर्क नहीं विश्वास था। कर्मकाण्ड नहीं भक्ति थी, ज्ञानोत्पादन नहीं आत्म-समर्पण था। अभिप्राय यह है कि ”कबीर पंथ में न तो शरीर को संयत करने की शिक्षा है, न श्वास रोकने की क्रिया। यहाँ न तो माला की आवश्यकता है, न यज्ञ रखने की, न आहूतियों की तथापि इसमें सहज उपासना के मार्ग में जिसे सामान्य गृहस्थ संघर्ष अपना निर्वाह कर सकता है, नाम जप द्वारा परमात्मा में विलीन होना है।”11 अतः कबीर पंथ को पारिवारिक धर्म कहें तो अत्युक्ति न होगी। इसमें मानव-मानव में भेद न होकर पारस्परिक समानता एवं भ्रातृत्व की भावना है। जिस प्रकार विभिन्न नामों वाली तथा विभिन्न दिशाओं से आई हुई नदियाँ समुद्र में मिलकर एक हो जाती है, उनका समुद्र ही नाम हो जाता है उसी प्रकार कबीर पंथ को ग्रहण कर सभी महान् एवं समान हो जाते हैं। किसी प्रकार की विषमता नहीं रह जाती। यह मानव मात्र के लिए कल्याणकारी है।

निष्कर्ष

उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि कबीर पंथ में प्रचलित उपासना पद्धति एक ऐसी सम्पूर्ण उपासना पद्धति है जो व्यक्ति के विविध ताप का निवारण कर उसे इस जीवन में या मरणोत्तर जीवन में भी सुख-शांति प्रदान करता है। यदि आज महात्मा कबीर व कबीर पंथी संतो की हार्दिक भावनाओं को सम्पूर्ण राष्ट्र में स्वीकृत कर लिया जाये, तो उन समस्याओं का समाधान निकाला जा सकता है जो सम्पूर्ण समाज की उन्नति में बाधक है।

संदर्भ

1. हजारीप्रसाद ग्रंथावली, हजारीप्रसाद द्विवेदी 202
2. कबीर समग्र, डॉ.युगेश्वर 20
3. कबीर जीवन एक संदेश, विवेक मोहन 35
4. कबीर ग्रंथावली, डॉ.रामकिशोर शर्मा 102
5. कबीर ग्रंथावली, डॉ.श्यामसुन्दर दास 39
6. कबीर समग्र डॉ.युगेश्वर 35
7. वही, 70
8. कबीर, पारसनाथ तिवारी 76
9. कबीर के ज्वलंत रूप, धर्मेन्द्र दास 63
10. कबीर दर्शन, अभिलाष दास 120
11.कबीर नाटक, सनाथ साहब 19